रिसाला

उक़ीदा शरीफ़ा

लेखक

हज़रत बन्दगी मियाँ

सय्यद ख़ुदंमीर सिद्दीक़े विलायत रज़ी०

अनुवादक

श्री शेख़ चाँद साजिद

इदारतुल इल्म महेदवियह इस्लामिक लाइब्रेरी

मर्कज़ी अंजुमने महेदवियह बिलडिंग,

चंचलगुडा, हैदराबाद - ५०० ०२४.

अकीदा शरीफ़ा :

इसका दूसरा नाम ‘‘उम्मुल-अक़ाइद’’ है।
शाह ख़ुंदमीर रज़ी० ने शुद्ध अक़ाइदे महदवियह
और तालीमात जो उन्हों ने ख़ुद महेदी अले० की
ज़बान से सुने थे इस रिसाले में लिख दिये हैं
और महेदी अले० के तमाम सहाबा रज़ी० ने
सर्वसम्मति से उसको
प्रमाणिक ठहराया है।

अक़ीदा शरीफ़ा

इमाम महेदी अले० ने फ़र्माया कि मुझे हर दिन अल्लाह की ओर से बग़ैर किसी माध्यम के शिक्षा दी जाती है, कहो कि मैं अल्लाह का बन्दा और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ला० का ताबे हूँ। मुहम्मद महेदी मौऊद आख़िरुज़-ज़माँ अल्लाह के पैग़म्बर के वारिस, अल्लाह की पवित्र पुस्तक के वारिस और ईमान की माहियत के आलिम, हक़ीक़त (दीन का बातिन), शरीअत (दीन का ज़ाहिर) और रिज़वान (अल्लाह की प्रसन्नता के दर्जात) के मुबय्यिन (प्रकटकर्ता) हैं।

उद्देश्य यह है कि बन्दा सैयद ख़ुंदमीर बिन मूसा ने यह अहकाम सैयद मुहम्मद महेदी अलेहिस्सलाम की ज़बान से सुने हैं। महेदी अले० ने फ़र्माया है कि हर हुक्म जो मैं बयान करता हूँ, अल्लाह की ओर से और अल्लाह के आदेश से बयान करता हूँ। जो कोई इन अहकाम से एक हर्फ़ (अक्षर) का मुन्किर होगा वह अल्लाह के पास माख़ूज़ (जवाबदेह) होगा। आप अले० ने अल्लाह के हुक्म से अपनी ज़ात के महेदी होने का इज़्हार किया और अपनी महेदियत के सुबूत पर अल्लाह का हुक्म, अल्लाह का कलाम और रसूलुल्लाह सल्ला० की मुवाफ़क़त (अनुकूलता) को हुज्जत (प्रमाण) में पेश किया, जैसा कि अल्लाह तआला का फ़र्मान है

افمن كان على بينة من ربه ..... ولكن اكثر الناس لا يومنون (هود ١٧)

क्या वह व्यक्ति जो अपने रब की ओर से रोशन दलील पर हो, और उसके साथ एक गवाह (कुरआन) भी आ गया हो, और उस से पहले

मूसा की किताब (उस की गवाह हो) जो इमाम और रहमत (नायक और दयालुता के रूप में) हो, (क्या ऐसा व्यक्ति झुटलाया जा सकता है) ऐसे ही लोग उस पर ईमान लाते हैं, और दूसरे गिरोह में से जो कोई उसका इन्कार करे, तो उसके लिये जिस जगह का वादा है वह (जहन्नम की) आग हैं। तो तुझे उसके बारे में कोई सन्देह न हो। वह तेरे रब की ओर से हक़ है, परन्तु अधिकतर लोग ईमान नहीं लाते। (११:१७)

इस प्रकार की और बहुत सी आयतें मश्हूर हैं। महेदी अले० ने फ़र्माया कि जो कोई इस ज़ात की महेदियत का इन्कार करेगा वह अल्लाह, अल्लाह का कलाम और अल्लाह के रसूल का मुन्किर होगा। आप अले० ने यह भी फ़र्माया कि यह अहकाम लोगों में ज़ाहिर करने के लिये हम मामूर (नियुक्त) हुवे हैं। जो कोई शख़्स अहादीस को आप के सामने हुज्जत में पेश किया तो आप अले० ने फ़र्माया कि अहादीस में इख़तिलाफ़ बहुत है, उनकी तस्हीह (संशोधन) कठिन है, जो कोई हदीस पवित्र क़ुरआन के और इस बन्दे के हाल के मुवाफ़िक़ (अनुकूल) हो वह सहीह है। मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ला० ने फ़र्माया है। ستكثر كم الاحاديث من بعدى فاعرضوها على كتاب الله فان وافقت فاقبلوها والاّ فردوها *अनक़रीब (शीध्र ही) मेरे बाद तुम्हारे लिये हदीसें बहुत हो जायेंगी, पस तुम उनको अल्लाह की किताब से मिला कर देखो, यदि मुवाफ़िक़ हों तो उनको स्वीकार करो वरना रद करदो।*

हज़रत महेदी अले० ने भी बाज़ अहादीस बयान फ़र्माये जो उन लोगों के अक़ीदे और फ़हम (समझ) के ख़िलाफ़ हुवीं। जिन लोगों ने इस हदीस को हुज्जत बनाया कि ''महेदी ज़मीन को न्याय से भरदेगा जैसा कि वह अत्याचार से भरी होगी'', यानि महेदी अले० पर तमाम जगत के

लोग ईमान लायेंगे और इताअत करेंगे, तो उनके जवाब में आप अले० ने फ़र्माया कि तमाम मोमिन ईमान लाये और इताअत किये, और अपने मान्ने वालौं के हक़ में आप अले० ने यह आयत सुनाई فالذين هاجروا واخرجوا من ديارهم واوذوا فى سبيلى وقاتلوا وقتلوا (آل عمران ۱۹۵)

जिन लोगौं ने हिज्रत की और जो अपने घरौं से निकाले गये और मेरे मार्ग में सताये गये, और लड़े और मारे गये। (३:१९५)

और यह सिफ़तें जो इस आयत में बयान की गई हैं महेदवियों के हक़ में क़रार दी, और फ़र्माया कि यह अलामतें उनमें मौजूद हो चुकीं, मगर एक सिफ़त ''लड़े और क़त्ल हुवे'' बाक़ी रह गई है, उसको आप अले० ने मशीयते इलाही पर रखा कि अल्लाह तआला जब चाहेगा उसका ज़हूर होगा। जिसका हाल इस आयत के मुवाफ़िक़ होगा वह महेदवियौं के ज़ुम्रे (गिरोह) में होगा। जिस किसी ने हज़रत महेदी अले० को स्वीकार किया लेकिन हिज्रत से और हज़रत महेदी अले० की सुहबत से मुंह फेरा उसपर मुनाफ़िक़ी का हुक्म हज़रत अले० ने इस आयत से फ़र्माया لا يستوى القاعدون من المومنين..... وكان الله غفوراً رحيما (النساء ۹۵،۹۶)

बिना किसी आपत्ति के बैठे रहने वाले मोमिन, और अपने धन और प्राणौं के साथ अल्लाह के मार्ग में जिहाद करने वाले बराबर नहीं हो सकते। माल और जान से जिहाद करने वालौं का दर्जा अल्लाह ने बैठे रहने वालौं की निस्बत बड़ा रखा है, और हर एक से अल्लाह ने भलाई का वादा किया है। और अल्लाह ने जिहाद करने वालौं को बैठे रहने वालौं पर अज्रे अज़ीम में बरतरी दी है। उनके लिये अल्लाह की ओर से बड़े दज्रे हैं और मग़्फ़िरत (क्षमा) और रहमत है। और अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है (४:९५,९६)

और तौबा करने वालौं के हक़ में महेदी अले० ने यह आयत पढ़ी
الا الذین تابوا واصلحوا واعتصموا باللہ ......اجرا عظیما (النساء۱۴۶)
अलबत्ता जिन लोगौं ने तौबा करली, और सुधर गये और अल्लाह को मज़बूती से पकड़ लिया और अपने दीन को अल्लाह के लिये ख़ालिस कर लिया तो यह लोग ईमान वालौं के साथ होंगे, और अल्लाह ईमान वालौं को जल्द ही बड़ा प्रतिदान प्रदान करेगा। (४:१४६)

इज़रत महेदी अले० ने फ़र्माया कि इस बन्दे के सामने तस्हीह होती है, जो यहाँ मक़्बूल (स्वीकृत) हुवा वह अल्लाह के पास भी मक़बूल है, और जो मेरे पास सहीह न हो वह अल्लाह के पास मर्दूद (अस्वीकृत) है। यह भी फ़र्माया कि महेदी का इन्कार करने वालौं के पीछे नमाज़ न पढ़ो, और अगर पढ़े हों तो फिर लौटा कर पढ़ो।

आप अले० ने फ़र्माया कि जो हुक्म और बयान तफ़ासीर और दूसरी चीज़ौं में इस बन्दे के बयान के विरुद्ध पाया जाये वह सहीह नहीं है, और जो आमाल और बयान इस बन्दे का है अल्लाह की शिक्षा से और मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ला० की इत्तेबाअ से है।

आप अले० ने फ़र्माया कि हम किसी मज़्हब (चार अइम्मा के) के साथ मुक़य्यद (आबद्ध) नहीं हैं, अगर कोई हमारी सत्यता को मालूम करना चाहता है तो उसको चाहिये कि अल्लाह के कलाम की मुवाफ़क़त और रसूलुल्लाह सल्ला० की इत्तेबाअ को हमारें अहवाल और आमाल में तलाश करें और समझ लें, जैसा कि अल्लाह तआला फ़र्माता है
قل ھذہ سبیلی ادعوا الی اللہ علیٰ بصیرۃ انا ومن اتبعنی (یوسف۱۰۸)
कह दो (ए मुहम्मद सल्ला०) यह मेरा मार्ग है, मैं (लोगौं को) अल्लाह की तरफ़ बुलाता हूँ बीनाई पर, मैं भी और वह जो मेरा ताबे है। (१२:१०८)

आप अले० ने फ़र्माया कि हक़ तआला ने हमको विशेषतः इस लिये भेजा है कि वह अहकाम और बयान जो विलायते मुहम्मदी से संबंधित हैं महेदी के माध्यम से ज़ाहिर हों।

आप अले० ने फ़र्माया कि अल्लाह तआला का फ़र्मान है

ثم ان علينا بيانه *फिर निस्सन्देह हम पर है बयान उस (क़ुरआन) का (७५:१७)।*

यह बयान महेदी अले० की ज़बान से होता है।

आप अले० ने फ़र्माया कि ख़ुदा को सर की आँख से दुनिया में देखना है, देखना चाहिये, और हक़ तआला के दीदार की गवाही ख़ुद आप अले० ने भी दी अल्लाह के हुक्म से और अल्लाह के रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ला० की ओर से, और यह हुक्म दिया कि हर ऐक मर्द और औरत पर अल्लाह के दीदार की तलब् (इच्छा) फ़र्ज़ है। जब तक सर की आँख या दिल की आँख या स्वप्न में अल्लाह को न देखे, मोमिन न होगा, मगर जो तालिबे सादिक़ (अल्लाहे के दर्शन की वास्तविक इच्छा रखने वाला) अपने दिल का रुख़ ख़ुदा की ओर लाया हुवा है, और हमेशा ख़ुदा के साथ मश्ग़ुल है, और दुनिया और ख़ल्क़ से उज़लत यानि एकांत अपना लिया है, और अपने (अहवांद) से बाहर आने की हिम्मत करता है, तो ऐसे शख़्स पर भी महेदी अले० ने ईमान का हुक्म फ़र्माया है।

महेदी अले० ने फ़र्माया कि ईमान ज़ाते ख़ुदा है (ख़ुदा को देखना ही हक़ीक़ी ईमान है)

हज़रत महेदी अले० ने मुज्तहिदौं और मुफ़स्सिरौं के अक़ीदे के ख़िलाफ़ बाज़ आयतें बयान की हैं। चुनांचे हस्रे ईमान (निर्भरता) के

विषय में यह आयत बयान फ़र्माई ...

انما المومنون الذين اذا ذکر الله وجلت قلوبهم واذا تليت عليهم آياته زادتهم
ايمانا وعلى ربهم يتوكلون ٥ الذين يقيمون الصلوٰة
اولئک هم المومنون حقا(الانفال۲،۳،۴)

ईमान वाले तो वही हैं जब अल्लाह का नाम लिया जाये तो उनके दिल काँप उठें, और जब उनके सामने उसकी आयतें पढ़ी जायें तो वे उनके ईमान को और बढ़ा दें, और वे अपने रब पर भरोसा रखते हैं। नमाज़ क़ायम करते हैं और हमने जो-कुछ उन्हें दिया है उसमें से (अल्लाह के मार्ग में) ख़र्च करते हैं। यही लोग सच्चे ईमान वाले हैं। (८:२,३,४)

वह तालिब जिसके सिफ़ात ऊपर बयान किये गये उसको इस आयत से ईमान के हुक्म में रखा। दोज़ख़ियों के दोज़ख़ में हमेशा रहने का हुक्म इस आयत से फ़र्माया।

بلی من کسب سيئة واحاطت به خطيئته فاولئک اصحاب النار هم فيها خالدون(البقرة٨١)

हां जिसने कोई बुराई की और उसके गुनाह ने उसे अपने घेरे में ले लिया, तो वही लोग दोज़ख़ वाले हैं, वे इसमें हमेशा रहेंगे। (२:८१) इसी प्रकार अल्लाह का फ़र्मान है:

ومن يقتل مومنا متعمدا فجزآءه جهنم خالداً فيها وغضب الله عليه
ولعنه واعدله عذابا عظيما(النساء٩٣)

और जो शख़्स किसी मोमिन को जान-बूझ कर क़त्ल करे तो उसकी सज़ा जहन्नम है जिसमें वह हमेशा रहेगा और उसपर अल्लाह का ग़ज़ब और उसकी लानत है, और अल्लाह ने उसके लिये बड़ा अज़ाब तैयार कर रखा है। (४:९३)

दुनिया की इच्छा रखने वाले के लिये दोज़ख़ का वादा इस आयत से बयान फ़र्माया:

من كان يريد العاجلة عجلناله فيها ما نشاء لمن نريد ثم جعلنا له

جهنم يصلٰها مذموما مدحورا (بنی اسرائیل ۱۸)

जो शख़्स आजिला (जल्द हासिल होने वाली दुनिया) को चाहता हो, उसे हम उसमें से दे देते हैं, जितना भी हम जिसे देना चाहें। फिर हमने उसके लिये जहन्नम ठहरा दी है, वह उसमें दाख़िल होगा बद-हाल और रांदह (ठुकराया हुवा) होकर। (१७:१८)

तर्के हयाते दुनिया के विषय में यह आयत बयान फ़र्माइ:

من عل صالحا من ذكر وانثٰى وهو مومن فلنحيينه حياة

طيبة ولنجزينهم اجرهم باحسن ما كانوا يعملون (النحل ۹۷)

जो शख़्स नेक काम (सांसारिक जीवन को छोड़ना) करेगा, चाहे वह मर्द हो या औरत, बशर्ते कि वह मोमिन हो, तो हम उसे ज़िदगी देंगे, एक अच्छी ज़िदंगी और जो कुछ वे करते रहे उसका हम उन्हें अवश्य अच्छा बदला देंगे। (१६:९७)

अल्लाह के सिवा दूसरी तमाम चीज़ौं से परहेज़ (संयम) के संबंध में यह आयत बयान फ़र्माई:

يا ايها الذين اٰمنوا اتقوا الله ولتنظر نفس ماقدمت لغد (الحشر ۱۸)

ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो, और हर शख़्स देखे कि उसने कल (क़ियामत) के लिये क्या भेजा है। (५९:१८)

महेदी अले० ने ज़िक्रे दवाम के संबंध में यह आयत पढ़ी

فاذا قضيتم الصلوٰة فاذكروا الله قياما وقعودا وعلى جنوبكم فاذا اطمانتم فاقيموا الصلواة ان الصلواة كانت على المومنين كتابا موقوتا(النساء۱۰۳)

पस जब तुम नमाज़ अदा कर लो तो अल्लाह के ज़िक्र में लगे रहो खड़े और बैठे और लेटे। फिर जब इत्मीनान हो जाए तो नमाज़ पढ़ो। बेशक नमाज़ मोमिनौं पर समय की पाबन्दी के साथ अदा करना फ़र्ज़ है। (४:१०३)

ऐ तालिबाने हक़ जो महेदी अले० के आशिक़ हो, तुम को मालूम हो कि यह बन्दा हज़रत महेदी अले० से पहली मुलाक़ात से आप सल्ला० की रेहलत तक हमेशा हज़रत अले० की सुहबत में रहा, और यह अहकाम जो बयान किये गये हैं उनमें से किसी हुक्म में हमने तफ़ाउत (विभेद) नहीं पाया। इन तमाम अहकाम पर हम सब ईमान और एतक़ाद रखते हैं। जो कोई हज़रत महेदी अले० के बयान में कोई तावील (कष्ट कल्पना) और तहवील (परिवर्तन) करे तो वह हज़रत महेदी अले० के बयान का मुख़ालिफ़ होगा।